बकरा, ब्राह्मण और तीन ठग

किसी गांव मे सम्भुदयाल नामक एक ब्राह्मण रहता था। एक बार वह अपने यजमान से एक बकरा लेकर अपने घर जा रहा था। रास्ता लंबा और सुनसान था। आगे जाने पर रास्ते में उसे तीन ठग मिले। ब्राह्मण के कंधे पर बकरे को देखकर तीनों ने उसे हथियाने की योजना बनाई।

एक ने ब्राह्मण को रोककर कहा, "पंडित जी यह आप अपने कंधे पर क्या उठा कर ले जा रहे है। यह क्या अनर्थ कर रहे है? ब्राह्मण होकर कुत्ते को कंधो पर बैठा कर ले जा रहे है।"

ब्राह्मण ने उसे झिडकते हुए कहा, "अंधा हो गया है क्या? दिखाई नहीं देता यह बकरा है।"

पहले ठग ने फिर कहा, "खैर मेरा काम आपको बताना था। अगर आपको कुत्ता ही अपने कंधो पर ले जाना है तो मुझे क्या? आप जाने और आपका काम।"

थोडी दूर चलने के बाद ब्राह्मण को दूसरा ठग मिला। उसने ब्राह्मण को रोका और कहा, "पंडित जी क्या आपको पता नही कि उच्चकुल के लोगो को अपने कंधो पर कुत्ता नही लादना चाहिए।"

पंडित उसे भी झिडक कर आगे बढ गया। आगे जाने पर उसे तीसरा ठग मिला। उसने भी ब्राह्मण से उसके कंधे पर कुत्ता ले जाने का कारण पूछा। इस बार ब्राह्मण को विश्वास हो गया कि उसने बकरा नहीं बल्कि कुत्ते को अपने कंधे पर बैठा रखा है।

थोडी दूर जाकर, उसने बकरे को कंधे से उतार दिया और आगे बढ गया। इधर तीनो ठग ने उस बकरे को मार कर खूब दावत उडाई।

<u>सीख</u> : किसी झूठ को बार-बार बोलने से वह सच की तरह लगने लगता है। अतः अपने दिमाग से काम ले और अपने आप पर विश्वास करे।

गकरा, ग्ल्ह्यी ञ्र ञीन ०ग

किमी गाँव भ मिमडुयाल नाभक एक ग्ल्ह्यी रहता था। एक गार वह मपन वेस्भान भ एक गकरा लकर मपन घर स रहा था। रामत लंग ञ्र मनुभान था। मुग स्न पर रामत में उम ञीन ०ग मिल। ग्ल्ह्यी क कंध पर गकर क रखिकर ञीन न उम लिषियान की यस्ना गनाँ।
एक न ग्ल्ह्यी क रक कर कहा, “पंडित जी यह मुप मपन कंध पर कुछ उठा कर ल स रह हो। यह कुमनमु कर रह हो? ग्ल्ह्यी हकर कुत्ते क कंध पर गठा कर ल स रह हो”
ग्ल्ह्यी न उम तिरस्कत हए कहा, “मंधा हो गया है क्या? दिखाई नहीं दता यह गकरा हो”
पहल ०ग न फिर कहा, “मरी भरो काम मुपक गता ना था। मगर मुपक कुत्त की मपन कंध पर ल स्ना हतो भाए क्या? मुप स्न ञ्र मुपका काम।”
थोड़ी दर घलन क गाद ग्ल्ह्यी क दूमरा ०ग मिला। उमन ग्ल्ह्यी क रक ञ्र कहा, “पंडित जी क्या मुपक पता नही कि उच्च कुल क लोग क मपन कंध पर कुत्त नही लादना गाहिए।”
पंडित उम भी तिरस्कत कर मुग गढ़ गया। मुग स्न पर उम ञीमरा ०ग मिला।
उमन भी ग्ल्ह्यी म उमक कंध पर कुत्त ल स्न का कारण पूछा। उम गार ग्ल्ह्यी क विमाम हो गया कि उमन गकरा नही गल्कि कुत्त क मपन कंध पर गठा रखा हो।
थोड़ी दर स्कर, उमन गकर क कंध म उतार दिया ञ्र मुग गढ़ गया। ञघर ञीन ०ग न उम गकर क भार कर खूग दावत उड़ाँ।

मीख : किमी एक क गार-गार गलन म वह मच की तरह लगन लगता हो। मत: मपन दिभाग म काभ ल ञ्र मपन मुप पर विमाम कर।